विद्या भवन बालिका विद्यापीठ

शक्ति उत्थान आश्रम लखीसराय

विषय संस्कृत व्याकरण 4 जुलाई 2020

वर्ग षष्ठ राजेश कुमार पाण्डेय

3 कारक चिह्न तथा शब्द रूप

कारक - शब्द के जिस रुप से उसका क्रिया के साथ सम्बन्ध प्रकट होता है, उसे कारक कहते हैं। ये कारक क्रिया के साथ किसी - ना - किसी रूप से सम्बन्धित होते हैं। इस विभिन्न प्रकार के सम्बन्धों के आधार पर हिन्दी भाषा में कारक के आठ भेद हैं। जबकि संस्कृत व्याकरण में कारक छह ही होते हैं। कारकों के प्रकट करने के लिए व्यक्तियों का प्रयोग किया जाता है। संस्कृत भाषा में सात विभक्तियाँ है। सम्बोधन की कोई विभक्ति नहीं होती। इसीलिए वह कारक नहीं है। वह कर्ता कारक का ही एक रूप है।

विशेष - संस्कृत व्याकरण में कारक छह ही हैं। सम्बन्ध कारक को संस्कृत में कारक के रूप में मानता प्राप्त नहीं है। कारक की परिभाषा बताते हुए स्पष्ट किया गया है की कारक वे होते हैं जिनका प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से क्रिया से सम्बन्ध हो। परंतु षष्ठी विभक्ति के द्वारा घोतित पद का क्रिया से सम्बन्ध नहीं होता, अपितु क्रिया को छोड़कर अन्य दो पदार्थों या शब्दों के परस्पर सम्बन्ध को बताने के लिए 'षष्ठी' विभक्ति का प्रयोग होता है। जैसे — राज्ञः पुरुषः आगच्छति।